जीवन का उद्देश्य

ये मेरे लिए बहुत बढ़े सम्मान की बात है कि मुझे यहाँ कुछ कहने का मौका मिला और मैं यहाँ कहना चाहता हूँ के ये एक व्यख्यान नही है| मैं नही समझता की मैं व्यख्यान की तय्यरी करके आया हूँ, लेकिन एक ये एक किस्म की नसीहत है मेरे लिए भी क्यूंकी मैने खुद अपने सामने रखी कुरसी पर बैठ कर देखा है| सिर्फ़ कुछ ही दिनो पहले कुछ ही सालो पहले कुछ ही लम्हो पहले, मैं बिल्कुल यहीं बैठा था जहाँ आप बैठे हैं| ईसाई, गैर मुसलिम, कोई भी धरम इसकी कोई मेहतव नही है| एक मनुष्ये जो की इसलाम से वाकिफ़ नही है और किसी लम्हे पर मैं भी एक था जो हकीक़त में ज़िंदिगी गुज़ारने का मकसद नही जानता था|

जानकारी है जो मैं आपके साथ साझा करना चाहते हैं, यह थोड़ा व्यापक लग सकता है।जानकारी जो मैं आपके साथ साझा करना चाह हैं, यह थोड़ा व्यापक लग सकता है।जब आप मानते हैं मानव मसतिष्क की शमता और ज्ञानकारी की मातरा की शमता जो वो गुणवाचन कर सकता है| तो आज के कुछ पन्नो के साथ ज्ञानकारी,मुझे यकीन है के ये आपका पल्ला भारी नही करेंगे|

ये मेरी ज़िम्मेदारी है के आज की बहेस का टॉपिक आप को बता दूँ - हमारी ज़िंदिगी का मकसद क्या है? और मैं आपसे सवाल करना चाहूँगा की आप इस्लाम के बारे मैं क्या जानते हैं? मेरा मतलब ये है के - क्या आप वाकाई इस्लाम को जानते हैं? नही, क्या सुना है आपने इस्लाम के बारे में; नही, क्या देखा है आपने कुछ मुसलमानो को करते हुए, लेकिन क्या जानते हैं आप इस्लाम के बारे में?

ये मेरे लिए बहुत बढ़े सम्मान की बात है कि मुझे यहाँ कुछ कहने का मौका मिला की मैं शुरू करू उस बात से की आप सब की बराबर ज़िम्मेदारी है| और ये ज़िम्मेदारी है की हम अपने खुले दिल और खुले ज़हेन के साथ पढ़े और सुनें|

ये दुनिया तासुब और तहज़ीबी रसमोरिवाज मैं डूबी हुई है ये किसी इंसान के लिए बहुत मुश्किल है के वो कुछ लम्हात सोचने के लिए निकाले| अपनी ज़िंदिगी के मकसद के बारे मैं सोचे| कोशिश करें के हुमारी हकीकी ज़िंदिगी के मकसद को और सचचाई को इस दुनिया के सामने लाएँ| बदकिस्मती से जब हम बहुत से लोगो से सवाल करते हैं के "आप की ज़िंदिगी का मकसद क्या है?" जो की एक बुनियादी और ज़रूरी सवाल है, वो आपको नही बातायंगे के क्या उन की अपनी ज़िंदिगी के बारे मैं ये अवलोकन या विश्लेषणात्मक तर्क के माध्यम है| बहुत बार तो ये भी आपको कहेंगे की ये वो कहता वो ये कहता है और आपको ये बातायंगे की आम तौर पर लोग क्या समझते हैं| मेरे पिताजी कहते थे की ज़िंदिगी का मकसद वही है जो पादरी ज़िंदिगी का मकसद बताए जो मेरे अध्यापक स्कूल मैं बताए या जो मेरे दोस्त बताए|

अगर मैं किसी से कुछ खाने का मकसद पूछता हूँ, "क्यू हम खाते हैं?" बहुत से लोग सिर्फ़ एक शब्द मैं उत्तर देंगे की,"ये हुमारी गिज़ा है" क्यूंकी गिज़ा हुमारी ज़िंदिगी को कायम रखती है| "अगर मैं कहूँ के हम क्यू काम करते हैं?" वो कहेंगे की ये ज़रूरी है हुमारे लिए और इसके ज़रिए हम अपनी और अपने कुनबे की ज़रूरियत को पूरा करते हैं| अगर मैं किसीसे पूछ लू के वो क्यू सोते हैं, वो क्यू नहाते हैं, वो क्यू वसतर पेहनते हैं वगेरा वगेरा वो जवाब देंगे के "ये आम ज़रूरियत इंसानो के लिए हैं", हम इस तरह के करोड़ो सवाल पूछ सकते हैं किसी भी ज़ुबान मैं और दुनिया मैं किसी भी जगह हर एक से एक ही जैसे जवाबत प्राप्त होंगे, बिल्कुल इसी तरह के जब हम सवाल करते हैं किसी से के ज़िंदिगी का हासिल और ज़िंदिगी का मकसद क्या है तो हम क्यू तरह तरह के उत्तर हासिल करते हैं| क्यूंके लोग उलझे हुए हैं वो हकीकत मैं नही जानते वो अंधेरो मैं भटक रहे हैं बजाए इसके के वो बताए के हम नही जानते वो एसे उत्तर देते हैं| जिससे एसा लगता है के पहले से तय्यार किए गये हैं|

चलें इस बारे मैं सोचते हैं| क्या इस दुनिया मैं हुमारी ज़िंदिगी का मकसद सिर्फ़ खाना, सोना, वस्तर पहनना, काम करना, कुछ हासिल कारणओर खुद को खुश रखना है? क्या यही हुमारी मकसद है? हम क्यू पैदा हुए? हुमारे होने का मकसद क्या है? और क्या राज़ छुपा है इस मखलूक को पैदा करने और इस ज़बरदस्त ब्रहमांड को बनाने मैं? इन सवालो के बारे मैं सोचिए!

कुछ लोग कहते हैं के ये साबित नही होता के कोई खुदा की हकीकत की हकीक़त है| ये भी साबित नही होता के कहीं खुदा है| इस बात के भी सबूत नही है के ये ब्रहमांड वजूद मैं आने का खुदा का कोई मकसद है| जो लोग इस तरह सोचते हैं और जो कहते हैं के दुनिया एसे ही वजूद मैं आ गयी, और बस एक बहुत बढ़ा विस्फोट हुआ और इतनी ज़बरदस्त दुनिया अपनी तरह तरह की मखलूक और सुंदरता के साथ वजूद मैं आ गयी| और वो कहते हैं की ज़िंदिगी का कोई खास मकसद नही है और ये के ये साबित नही हो सकता के खुदा है या कोई मकसद या खुदा का कोई मकसद है इस दुनिया को वजूद मैं लाने के लिए चाहे मन्तिक या विज्ञान से|

यहाँ मैं कुरान पाक की कुछ आयत पढ़ना चाहूँगा जो के हुमारे टॉपिक से मिलती हैं|

"आसमानो और ज़मीन के जनम लेने मैं और रात दिन के आने जाने मैं यकीनन अकलमांदो के लिए निशानिया हैं| जो अल्लाह तालहा का ज़िकिर उठते बैठते और अपने करवाटो पे लेटे हुए करते हैं और आसमानो और ज़मीनो की पैदाइश मैं गौर ओ फ़िकिर करते हैं और कहते हैं ए हुमारे परवरदीगार तूने ये बे मकसद नही बनाया, तू पाक है| बस हमें आग के आज़ाब से बचाले|" [कुरान - सुरा-३, आयात- १९०-१९१]

ऊपर दी गयी आयात में अल्लाह तआलआ बिलकुल साफ़ तरीके से ज़िकर करता है, वो पहले तवज्जे हमारी सरजन के तरफ दिलाता है| इनसानी जिस्म के विभिन्न हिस्से और लोगों की विभिन्न सोच और अंदाज़ और वो हमारी तवज्जे जंतुओ की तरफ दिलाता है, दिन और रात के बदलने की तरफ, सितारो की तरफ, आसमान की तरफ और आजज़ाम फलक की तरफ और फिर वो कहता है के उसने ये सब चीज़े किसी बेवकूफ़ाकना मकसद के लिए पैदा नही की हैं कयूंके जब आप उसकी हिकमत को देखते हैं तो आप जानते हैं के उसकी हिकमत कितनी कितनी ज़ादा ताकतवर और कितनी ज़बरदस्त है और कुछ उसकी हिकमत अमली जो बहुत ताकतवर और बहुत ज़बरदस्त है| हमारी सोच और हमारे अंदाज़ो से बाहर होती है ये कोई बेवकूफी या पागलपन नही हो सकता| ये आएसा भी नही होसकता की बस हो गया|

फ़रज़ करें के आप दस मारबल के टुकडे लें और उनहे एक से साद तक नंबर दें और ये तमाम अलग अलग रंग के हों और आप उनहे थैले के अंदर रखें और फिर थैले को हिलाएँ और फिर आप अपनी आँखो को बंद करें और फिर थैले को खोलें और मैं आपसे कहूँ के पहला मारबल का टुकड़ा निकालें और फिर दूसरा नंबर वाला और फिर तीसरे नंबर वाला टुकडा निकालें| एक तरकीब के साथ आपको कितना अंदाज़ा है के आप ये सारे मारबल नंबरओं की टरतीब से निकाल लेंगे? क्या आप जानते हैं के आप ये कितनी बार में कर सकते हैं| २६ मिलियन में से एक बार! तो कितनी संभावना है जन्नत के और ज़मीन फेंकी जाने के ज़बरदस्त धमाके से बन सकता है जेसा ये आज है| कितनी संभावना है इन सब चीज़ो की?

मेरे प्रिय काबिल दोस्तों- हमैन अपने आप से एक और सवाल करना पढ़ता है| जब आप पुल देखते हैं, एक इमारत या एक चलती गाढ़ी देखतें हैं तो आप खुद बा खुद समझ जातें हैं के ये किसी शक्स या किसी कंपनी ने बनाई होगी| जब आप एक हवाई ज़हाज़, रॉकेट, सेटलाइट या एक बढ़ा पानी का ज़हाज़ देखतें हैं, आप भी सोचते हैं के ये केसी अविश्वसनीय सवारियाँ हैं| जब आप देखतें हैं एक न्यूक्लियर पलांट, एक अंतरिक्ष स्टेशन, एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा जो तमाम चीजों से लेस हो, ये भी और दूसरी चीज़ें पाई जाती हैं इस मुल्क मैं- आप इन तमाम चीजों की इंजीनियरिंग गतिशीलता की तारीफ़ किए बिना नही रह सकते|

ये तो बस चीजें थी जो के इंसान ने बनाई हैं| इंसानी जिस्म और बढ़े और उलझे हुए निज़ाम के बारे मैं क्या हाल है? ज़रा इस बारे मैं सोचिए! सोचिए दिमाग़ के बारे मैं कैसे वो सोचता है, कैसे वो काम करता है, कैसे यह सोचता है, कैसे यह काम करता है, यह कैसे ये विश्लेषण करता है, कैसे ये जानकारी संग्रहित करता है, जानकारी हासिल करता है, और सेकेंड के हजारवें हिस्से मैं कैसे श्रेणी मैं जानकारी को संग्रहित करता है! और दिमाग़ तमाम चीजे मुस्तकिल करता रहता है| एक लम्हे के लिए एक दिमाग़ के बारे मैं सोचिए| ये दिमाग़ ही है जो गाढ़िया बनाता है, रॉकेट, कश्ती और बहुत कुछ- ज़रा दिमाग़ और जो वो बनाता है उसके बारे मैं सोचिए| दिल के बारे मैं सोचिए, कैसे वो मुस्तकिल साथ से सत्तर सालों तक पंप करता है और पुर जिस्म से खून लेता और छोड़ता रहता है और जिस्म को कैसे कायम रखता है के इंसान की पूरी ज़िंदगी चलती रहती है| ज़रा इस बारे मैं सोचिए! ज़रा इस बारे मैं सोचिए! गुर्दो के बारे मैं सोचिए के वो कैसे अपना काम जारी रखते हैं| जिस्म का सफाई साधन है, जो सैकड़ों रासायनिक विश्लेषणों के साथ-साथ और भी करता है, जैसे रक्त में विषाक्तता का स्तर नियंत्रित करता है। यह स्वचालित रूप से करता है। अपनी आँखों के बारे मे सोचिए इंसानी कमरो खुद बा खुद फोकस करता है आँखे तरजुमानी करती हैं अंदाज़े लगाती हैं और खुद से रंगो को पहचानती हैं कुदरती तौर पर रोशनी और फ़ासले की पहचान और अंदाज़ा करना, ये तमाम चीज़े खुद बा खुद काम करती हैं| इस बारे मैं सोचिए|

किसने ये बनाई हैं? कौन इनका मालिक है? किसकी ये हिकमत है? और किसने इनहे टरतीब दिया है? क्या इंसानो ने खुद? नही| बेशक नही|

ये कयनात क्या है? ज़रा इस बारे मैं सोचिए| धरती हमारे ब्रहमांड का एक ग्रह है| और हमारा ब्रहमांड एक निज़ाम है केहकशा का और कहकशा एक सितारो का झुंड है बहुत सी कहकशाओ मैं| ज़रा सोचिए की ये तमाम चीजे एक टरतीब मे हैं ये तमाम सही काम कर रही हैं| ये आपस मैं एक दूसरे से टकराती नही हैं और ना ही इनका आपस मैं तसादोम होता है| वो अपने मीडार के साथ टरटी हैं जेसे वो उसके लिए हैं| क्या इंसान इस तरह की हरकत मैं रह सकता है? क्या इंसान पूढ़ता के साथ ये सब कुछ कर सकता है? नही| यकीनन नही बेशक नही|

सोचो उन समुन्दरों, मछलियों, कीड़ों, पौधों, जीवाणुओं, रासायनिक तत्वों के बारे में जिन्हें खोजा नहीं गया है और जिन का पता भी नहीं लगाया जा सकता है यहां तक कि सबसे अधिक परिष्कृत उपकरणों से भी नहीं| फिर भी, उनमें से हर एक का कानून है जोसका वह पालन करते है। क्या यह सारा तुल्यकालन, संतुलन, सद्भाव, भिन्नता, डिज़ाइन, रखरखाव, संचालन, और अनंत संख्यान इत्तेफ़ाक से हुआ? और क्या यह सारी चीज़ें इत्तफ़ाक से ही उत्तम तरीके से, हमेशा से काम कर रही हैं? और क्या यह सब इत्तेफ़ाक से ही प्रजनन किये जा रही हैं, अपने आप को बरकरार रखें हैं? नहीं, बिलकुल नहीं|

सोचें तो ये बहुत विसंगत और बेवकूफ़ी वाली बात लगेगी लेकिन बहुत छोटा सा आपको इशारा ज़रूर देगा के आखिर ये कहां से आए| ये इंसान की सोच से बिल्कुल बाहर है| हम सब इस बात की पुष्टि करते हैं| जो जिस काबिले ए फ़िकिर है और जो काबिल है उसका शुकर अदा किया जाए वो जिसके पास तमाम क्षमताओं हैं वो खुदा है| खुदा ने ये सब पैदा किया और वो इन तमाम चीजो के कायम रखने का ज़िम्मेदार है| खुदा बस एक है जो काबिल तारीफ और

जिसका शुक्र आडया किया जाए|

अगर हम मे से हर एक को १०० डॉलर बाटूं बिना किसी वजह के सिर्फ़ यहाँ आने पर, आप मेरा कम से कम धन्यवाद करेंगे| तो आँखो के बारे मैं किया, आपके गुरदे, आपका दिमाग़, आपकी ज़िंदगी, आपकी साँस और आपके बच्चों के बारे मैं क्या ख़याल है? इस बारे मैं आप क्या जानते हैं? किसने दिए हैं ये आपको? क्या वो सरहाने या शुक्रिया कहलाने के हक़दार नही हैं? क्या वो आपसे अपनी इबादत करवाने और अपने आपको मनवाने का हक़दार नही हैं? मेरे भाइयो और बहनो दूसरे लफ़्ज़ो मई ये है मकसद और हासिल ज़िंदगी का|

अल्लाह ता आला क़ुरान पाक मे फरमाता है:

“मैने जिन्नात और इंसानो को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है के वो सिर्फ़ मेरी इबादत करें” (क़ुरान सुरा ५१, आयात ५६)

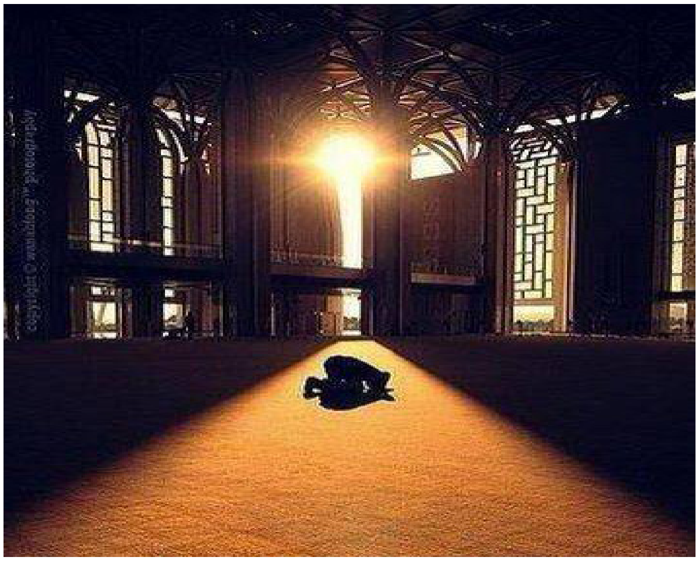

ये है जो कहा अल्लाह ता आला ने| तो हमारी ज़िंदगी का मकसद है के हम अपने बनाने वाले को पहचाने और उसके एहसान मंद हों| खालिक की इबादत करें| हम अपने आप को उसके सामने झुका लें| और उसके कानूनो पर चलें जो उसने दिए हैं| कम शब्दो मैं इसका मतलब इबादत है| ये हमारी ज़िंदगी का मकसद है| और इस इबादत को करने के लिए हम किया करेंगे, खाएँगे, पिएँगे, कपडे पहनेंगे, काम करेंगे, मज़े उड़ाएंगे अपनी ज़िंदगी और मौत के बीच| ये सब तो लाज़मी है ही| हमको पैदा किया गया है इबादत के लिए| ये हमारी ज़िंदगी का मकसद होना चाहिये| मेरा ईमान है के कोई भी ज़ों के विज्ञान या तजज़ियती इल्म रखने वाला इस मकसद से मुत्ताफ़ीक़ होगा| लोगों के हो सकता है और दूसरे मकसद भी हों लेकिन कुछ है जो उनके और खुदा के दरमियाँ चल रहा है|

अब हम मोज़ू के दूसरे हिस्से की तरफ आते हैं|आप इस्लाम के बारे मैं क्या जानते हैं? नही, क्या आपने इस्लाम के बारे मैं सुना है? नही, क्या आपने देखा है मुसलमानो को अमल करते हुए? क्यूंके इस्लाम और मुसलमानो मैं बढ़ा फ़र्क़ है| इसको यूँ समझे के जिस तरह एक बाप और एक आदमी| एक आदमी जिसके बच्चे हों| वो है एक बाप, लेकिन बाप होने की हेसियत से उसकी ज़िम्मेदारियाँ हैं| अगर एक आदमी अपनी ज़िम्मेदारियूं को पूरा नही करता है तो ये लाज़मी नही है के वो अच्छा बाप नही है| इस्लाम एक हुक्म और कानून है| अगर एक मुसलमान इस हुक्म की पाबंदी नही करता और कानून पर अमल नही करता तो वो अच्छा मुसलमान नही है लिहाज़ा इस्लाम को मुसालमोनो के लिहाज़ से नही देखें|

हमने इस्लाम और मुसलमानो जेसे शब्द सुने हैं और हम अपने स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटीओ के निसाब की किताबों मैं इस्लाम के बारे मैं पढ़ते हैं हमने बहुत सी गलत, गुमराह करने वाली बातें और जानते बूझते झूटी खबरें जोकी पहलाई गयीं, मीडीया के ज़रिए सुनीं और देखीं| और मैं इस बात को मानता हूँ के कुछ इस तरह के ग़लत मालोमात और ग़लत बयानी हमेशा खुद मुसलमान भी करते हैं इस के बावजूद इस दुननिया मैं पाँच अरब मुसलमान हैं हर पाँच लोगों मैं से एक मुसलमान है| ये रिसर्च है आप इसकी तसदीक़ एनसाइक्लोपीडिया या दूसरे ज़रिए जिससे भी आप चाहें कर सकते हैं ये केसे हो सकता है के इस दुनिया मैं हर पाँच मैं से एक शख़्स मुसलमान हो और हम कहें के इस्लाम की हक़ीकत के बारे मैं हम कुछ नही जानते? अगर मैं आपसे कहूँ के दुनिया मैं हर पाँच मैं से एक शख़्स चीनी था, जोकि हक़ीकत है| एक अरब चीनी दुनिया मैं हैं| हर पाँच लोगों मैं एक चीनी है तो आप जानते हैं चीनी और चीनी लोगों के जियोग्रफ़ी, सोसाइटी, राजनीति, फ़िलासोफी और हिस्टरी को| तो केसे हम इस्लाम के बारे मैं नही जानते?

क्या है ये ताल्लुक़ जो जोड़ता है अलग अलग क़ोमों और इस कयनात की टरतीब को एक बिरादरी मैं? जो मेरे बहिन, भाई यमन मैं बनता है जबके मेरा ताल्लुक़ अमेरिका से है और जो मुझे भाई बनाते हैं मेरे भाई बहिन ऑस्ट्रेलिया से हैं और एक दूसरा भाई इंडोनेशिया मैं है| और भाई आफरिका से और दूसरा एक भाई थाइलैंड से और इटली से, ग्रीस, पोलैंड, आस्ट्रीया, कोलंबो, बोलोविया, कास्टा रीका, चाइना, सपेन से, रूस से और बहुत से| क्या है जिसने इनको मेरी बहिन और मेरा भाई बनाया? हम मुख्टालीफ़ तहज़ीबो और नफ़्सीयती पसमंज़र से ताल्लुक रखते हैं| क्या हे इस्लाम मैं जो हमें खुद बा खुद कुबूल करता है? और हमें भाईचारे मैं जोड़ देता है? असल वजह क्या ज़िंदगी के बारे मैं ग़लत फहमी की जो के लोगों मैं बढ़ी तादाद मैं है

मैं कोशिश करूँगा के कुछ हक़ीक़तें आपके सामने रख सकूँ लेकिन इसके साथ, जेसे मैने पहले कहा की ये ज़रूरी है के आप खुला ज़हेन और खुला दिल रखें क्यूंकी अगर मैं गलास को उलटा रखकर इस पर पानी उंडेलूं तो मैं कभी भी गलास मैं पानी हासिल नही कर सकता इसको सीधा करना पड़ेगा सिर्फ़ हक़ीक़तों से ही बात समझमें नही आती है इसके साथ बरदाश्त होसला सरहाने का जज्बा और सच्चाई को कुबूल करने की ज़रूरत होती है जब भी आप सुनें|

शब्द ‘इस्लाम’ का अरथ है मगलूब होना (गुलाम), तसल्लुम मैं सर झुका लेना, फ़रमा बरदारी करना| आप इसे इलहा कह सकते हैं, खालिक कह सकते हैं, अज़ीम खुदा कह सकते हैं, अज़ीम ताक़त कह सकते हैं और ऐसे जीतने अच्छे नाम हैं सब इसके हैं|

मुसलमान खुदा के लिए अरबी शब्द इलहा इस्तीमाल करते हैं क्यूंके अरबी मैं इसके कोई दूसरे मतलब नही हैं| शब्द इलहा किसी भी मखलूक़ पर नही रख सकते अलबत्ता अज़ीम जेसे दूसरे अल्फ़ाज़ लोग मखलूक़ के लिए इस्तीमाल करते हैं| मसील के लिए जेसे “सबसे बढ़ा डॉलर”, “मैं अपनी बीवी को बहुत प्यार करता हूँ”, या वो अज़ीम हैं|

नही नही नही नही लेकिन शब्द इलहा एक पर ही लागू होता है जिसने सबको पैदा किया जिनका हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं| यहाँ से हम शब्द इलहा के इस्तेमाल की तरफ़ जाते हैं और आप जानते के हम किसके बारे में बात कर रहे हैं|

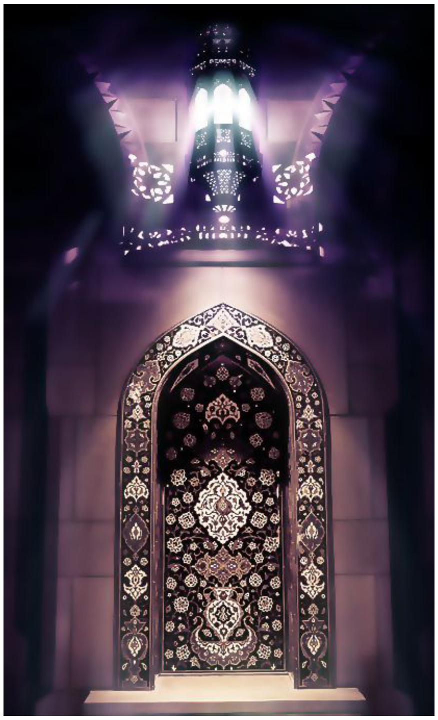

शब्द इस्लाम लिया गया है 'सलामह' की जड़ से जिसका मतलब है अमन| एक मुसलमान एक शक़्स है जो के मगलूग़ होता है, तसलीम करता है और फर्मा बरदारी करता है अज़ीम खुदा के क़ानून की और उसे उन तस्लीमत से अमन और सुकून हासिल होता है| हम जल्द देख सकेंगे इस तशरी से के अरबी शब्द 'इस्लाम' हमें बताता है वही तरीका और इख़्लाक़, जो बताया था माशहूर और क़ाबिल एहतराम इलहा के रसूलों और पेगंबरों ने| इन में आदम, नूः, दाऊद, सुलेमान, इसहाक़, इस्माईल, युसुफ, यहयाः, मरयम के बेटे ईसा और मोहम्मद स:| ये तमाम रसूल और पैगंबर एक ही इलाह की तरफ से भेजे गये और एक ही पैगाम लेकर आए इन सब के बात करने का एक ही अंदाज़ था और ये कहते थे बस एक चीज़| इलाह की फ़ार्मबरदारी करो! अज़ीम इलाह की इबादत करो, ज़िंदगी का मकसद पूरा करो और अच्छे काम करो तो आपको उसका बदला दूसरी ज़िंदगी मैं मिलेगा| ये तमाम कहते थे की इस से आगे कुछ नहीं करना इससे बजाए की उनकी ज़ुबान किया थी और किस वक़्त के थे और किसने उन्हे भेजा, वो सब कहते यही थे|

अगर आप पन्ने थोड़ा ख़याल से बिना अपनी सोच को या किसी दूसरे के किए गये इज़ाफ़े को या झूट को शामिल किए पढ़े तो आप पाएँगे के ये एक सादा पेगाम था तमाम पेगंबर का जिस एक से दूसरे ने ताज़दीक की इन पेगम्बरो मैं से कोई भी आएसा नही था की जिसने कभी कहा हो के मैं खुदा हूँ मेरी इबादत करो| आप अपनी पाक किताबें देखलें आप किसी किताब मैं नहीं पायंगे ना तो इंजील मैं, ना तोरा मैं, ना अहेदनामे मैं, ना ज़ुबूर मैं, आप किसी किताब मैं नही पायंगे| आप किसी पेगंबर की तक़रीर मैं नही पायंगे, आप घर जाएँ रात मैं और इंजील के तमाम पन्ने पलट के देखें और मैं ज़िम्मेदारी लेता हूँ के आप कहीं नही पायंगे| कहीं भी! तो ये कहाँ से आया? ये है जिसकी आपको तहकीक करनी पड़ेग|

इस वजाहत से आसानी से हम देख सकते हैं के अरबी शब्द जो हमे बताता है वो पेगम्बरो ने करके दिखाया| वो तमाम आए और खुद को अल्लाह के सामने पेश कर दिया| अल्लाह का गलबा खुद पर चढ़ा लिया, लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया, लोगों को कहते रहे और इसरार करते रहे के नेक काम करें| मूसा के दस एहकामात, वो क्या थे? इब्राहिम की तक़रीर, वो क्या थी? दाऊद की ज़ुबूर वो क्या थी? सुलेमान की मिसालें, क्या कहा था उन्होंने? ईसा की गॉस्पेल, उन्होने क्या कहा? यहयाः ने क्या कहा था? इशाक़ ने क्या किया और इस्माईल ने क्या कहा? मोहम्मद स: ने क्या कहा? इससे ज़ादा कुछ नही!

“उन्हे इसके सिवा कोई हुकुम नही दिया गया के सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें उसके लिए दीं को खालिस रखें| इब्राहिम हनीफ़ के दीन पर और नमाज़ को कायम रखें और ज़कात देते रहें, यही है दीन सीधी मिल्लत का”
(क़ुरान सुरा ९८, आयात ५)

अल्लाह ताआला फरमाते हैं के “वो कोई हुकुम नही देते सिवाए इसके के अल्लाह की इबादत की जाए, सिर्फ़ उसके बनके रहो और यही सीधा रास्ता है| ये असल पेगाम था| इसी तरह ये बेहतर होगा के हम समझें रासूलों और पेगम्बरो को मुसलमानो की तरह| क्यूंकी एक मुसलमान क्या है? अरबी इस्तलहात को छोड़े, ये भी ना सौंचे की हम क्या कह रहे हैं” मक्के के बारे मैं या साओदी अरब या मिस्र के बारे मैं ना सोचें| नही! सोचें शब्द मुसलमान का क्या मतलब है| “ज़ो अज़ीम अल्लाह के सुपुर्द करदे और अज़ीम अल्लाह के क़ानूनो पर अमल करता रहे”, इसमे चाहे सुपुर्दगी क़ुदरती हो या मादी तोर पर| हर तरह से अल्लाह के क़ानूनो के आगे सर झुकाए वो मुस्लिम है|

तो जब एक बचा अपनी माकी कोक से बाहर आता तो उस वक़्त अल्लाह का हुकम होता, वो क्या है? वो एक मुसलमान है जब सूरज अपने दायरे के अंदर घूमता है तो वो क्या है? एक मुसलमान है! कशिश शक़्ल का क़ानून वो क्या है? वो एक मुसलमान है! हर वो चीज़ जो खुद को अज़ीम खुदा के सुपुर्द करती है वो मुसलमान है! लिहाज़ा जब हम अपनी मर्ज़ी से अज़ीम खुदा की फ़रमाबरदारी करते हैं तो हम मुसलमान हैं! ईसा मसीह एक मुसलमान थे| उनकी मेहेरबान माँ मुसलमान थी| इब्राहिम मुसलमान थे, मूसा एक मुसलमान थे| तमाम पेगंबर मुसलमान थे! लेकिन वो अपने लोगों मैं आए और वो मुख़्तलिफ़ ज़ुबान बोलते थे| हज़रत मोहम्मद स अरबी ज़ुबान बोलते थे| तो अरबी ज़ुबान मैं जो शक़्स खुद को सुपुर्द कर दे और पेश करदे वो मुसलमान है|अल्लाह ताआला का हर रसूल और पेगम्बर बिल्कुल एक जेसा लेकर आए और ये बुनियादी पेगाम है के “अज़ीम खुदा की इबादत

करो और खुलूस के साथ उसके होजाओ"| इसी तरह हम हर माशहूर पेगमबर के पेगाम की तहकीक करें तो इस हक़ीकत को पा लेंगे|

यहाँ फ़रक है, ये नतीजा है मुसनीफो, तरीकदानो, सक़ॉलरॉन और इफ़राद की मुजरमिाना झूटे इंदिराजि का, मलिावट का, ज़ाती तरजुमानी का| मसिाल के तोर पर मैं जेसे आपको वाज़े करता हूँ जो के आप पहले ही जानते हैं| एक ईसाई के हैसयित से मैंने इसे देखा मेरे मुसलमान होने से पहले और मैं नही समझता था के केसे पूरे पुराने एहेडनामे मैं खुदा को हमेशा एक के हवाले से ज़कि़र किया गया है| आका और मालकि और कयनात का बादशाह और यही पहला हुकम मूसा को दयिा गया था| वो इजाज़त नही देता के कसिी तराशी हुई षबी की इबादत की जाए या जन्नत मैं कसिी चीज़ के सामने झुका जाए या ज़मीन पर या समुंदर मैं| वो खुदा हरगज़ि इजाज़त नही देता| तमाम रासूलों ने कहा के खुदा सरि़फ़ एक है| पूरे पुराने एहेदनामे मैं इस बात को बार बार दोहराया गया है| और फरि अचानक हम चार एहेदनामे पाते हैं जो के चार गॉसपेल कहलाई जाती हैं मेथहयि, मारक, लयूक और जान| मेथहयु कौन है? मारुक कौन है? लयूक कौन है? जान कौन है| चार अलग अलग गॉसपेल जो के ४८ सालों मैं लखिी गयी थीं, और उनमें से कसिीने भी एक दूसरे की मदद नही की और नाही उनमें से कसिीने भी अपने नाम का आखरी हसि्सा लखिा है| अगर मैं आपको इस महीने के वेतन का चेक दूँ और मैं उस पर अपने नाम का पहला हसि्सा लखिूं और कहूं इसे बेंक लेजाओ क्या आप इस चेक को कुबूल करेंगे? नही, आप नही करेंगे| अगर पोलीस वाला आपको रोके और आपसे आपकी पहचान मालूम करे या पासपोर्ट मांगे और आप उसे सरि़फ़ अपने नाम का पहला हसि्सा बताएं, क्या वो उसे मान लेगा? क्या अपने नाम का पहले हसि्से वाला पासपोर्ट ले लेंगे? क्या आपके मा बाप आपको सरि़फ़ एक ही नाम देते हैं? कहाँ पूरी इंसानों की तारीख मैं एक नाम को कागज़ात मैं शामलि कयिा गया है, कहां? कहीं नही सविाय नये एहेदनमे के!

और केसे आप इन चार इन गॉसपेल पर इमान रख सकते हैं जो चार शक्सो ने लखिी हैं जनिके नाम का आखरी हसि्सा कहीं मालूम होता दखिाई नही देता? फरि इन चार गॉसपेल के बाद एक शकस ने करीब १५ कताबिें लखिीं जो के एक मुरतद था और उसने ईसआयिओं का कतल कयिा, उन पर तशदद कयिा और फरि उसने कहा के उसके तसव्वोर मैं ईसा अलेअस्सलम आए थे और वो मुखतार था जेसे एक इशू का रसूल(अपोसटल आफ जीसस)| अगर मैं आपको बताउ के तमाम यहूदयिों को मारने के बाद हटिलर ने फ़ेसला कयिा उसे जान बचाने के लिए जगह चाहये और तो वो ईसा से या मूसा से मलिा और यहूदी हो गया? न्ही, आप इसे कुबूल नही करेंगे| तो केसे जनिहोंने चार जनिहोने चार कताबिें लखिी बगैर अपने नाम के आखरी हसि्से के और १५ दूसरी कताबिें लखिीं गयीं एक दूसरे शकस से| इन मैं पहली दफ़ा खुदा एक शकस "इंसान" कहलाया, और पहली दफा तीन मैं कहलाया और पहली ही दफ़ा खुदा ने बेटा दयिा था| ये केसे ईसाइयू के लिए काबलि ए कुबूल है? केसे? ज़रा इस बारे मैं सोचएि! मैं इस नुकते पर बहेस नही करूंगा| मैं सरि़फ़ आपको सोचने के लिए कुछ देना चाहता हूं|

हज़रत मोहमम्मद स ना तो कोई नया मज़हब लेकर आए थे या नाही ज़दिगी की नयी राह जसिे कुछ लोग बादशुगनी का दावा करते हैं| इसके उलट हज़रत मोहम्मद ने पछिले तमाम रसूल और पेगंबरों के पेगामत और उनकी ज़दिगी की ताज़दीक की| दोनो को अपने ज़ाती अमल के ज़रिए और जो उनहे अल्लाह की तरफ से वही की जाती थी| मकद्दीस कताबि जो हज़रत मोहम्मद स लेकर आए जसिे कुरान कहा जाता है| इसका मतलब है "जसिकी तलिावट की जाए|" क्यूंकी मोहम्मद स ने कुरान नही लखिा था| वो कुरान के मुनसफ़ि नही थे| कोई कुरान को लखिने मैं उनकी मदद को नही आया था और नाही उसके लखिने मैं कसिीने उनके साथ शरिकत की थी| फ़रशिता जसिका नाम जबि्राइल था पढ़कर उनको सुनाता और अज़ीम खुदा ने उनके दलि को कुबूल करने वाला कर दयिा था| हज़रत मोहम्मद स वही को याद करते थे और हमारे पास जो कुरान है सालों से कसिी भी तब्दीली से महफ़ूस है| क्या आएसी कोई और कताबि है दुनयिा मैं हसि आप जानते हों के वो बनिा कसिी तब्दीली के महफ़ूस हो? नही कोई कताबि नही, सरि़फ़ कुरान है|

आप मेरे अल्फ़ाज़ पर मत जाएँ! लाइब्ररी जाएँ और पढें एन्साइकलोपीडयिा ब्रतिानीका या वर्ल्ड एन्साइकलोपीडयिा, या अमेरकिनास एन्साइकलोपीडयिा या कोई दूसरा दुनयिा का एन्साइकलोपीडयिा जो की कसिी मुसलमान ना लखिा हो| पढें के क्या कहते हैं ये सब इस्लाम, कुरान और मोहम्मद स के बारे मैं| गैर मुसलमि पढें गोर ओ फ़कि्र के साथ कुरान, इस्लाम और मोहम्मद स के बारे मैं क्या कहते हैं| फरि आप मान जाएंगे की जो मैं कह रहा हूँ वो दुनयिा की दस्तावेज़ों मैं साफ साफ है! और मोहम्मद स इंसानयित की तारीख की सबसे बढी शकसयित हैं| पढें वो क्या कहते हैं कुरान सबसे अवशि्वसनीय, इतहिास के इतहिास मैं साहतिय का सबसे गहरा टुकडा है! पढें वे क्या कहते हैं के इस्लामी अनूकूल ज़दिगी अलग, बेहतरीन और गतशिील ज़दिगी है ये कभी नही बदलती|

पवति्र शास्त्र जो की मोहम्मद स को मलिा 'कुरान' कहलाता है और हर एक रसूल और पेगंबर ने भी पवति्र शास्त्र लएि| कुरान मैं इन रसूलओं का, उनके पवति्र शास्त्रओं का उनकी कहानयिा और उनके काम के उसूलों के बारे मैं ज़कि्र कयिा गया बहुत फ़कि्र के साथ| क्या मोहम्मद स उनसे मलि थे, उनसे बातें की थीं, उनके साथ खाना खाया था या शरीक हुए थे की उनकी आत्मकथा लखिी जाए? नही, बलिकुल नही| कुरान मैं मोहम्मद स का हवाला अज़ीम खुदा के पेगंबर से दयिा गया है| पछिले पेगंबरों के संदेशों की पुष्टि करते हैं| जो के एक इंसान होने की हेसयित से उनके करिदार की हद है|

"मोहमम्मद तुम्हारे मरदो मैं से कसिी के पतिा नही हैं, बल्कि अल्लाह के सन्देशता और नबयिो की मोहर हैं और अल्लाह तो हर चीज़ से खूब वाकफ़ि है" [कुरान ३३, सुरा ४०]

मुसलमान मोहम्मद स की इबादत नही करते, हम 'मोहम्मदी' नही हैं| हमें ये हक हासलि नही है के हम मोहम्मद स का नाम तब्दील करें और 'मोहम्मदी' कहलाएँ| नही, लोग जो मूसा की पेरवी करती हैं क्या वो 'मोसययेन' थे| जो लोग याकूब की पेरवी करते थे क्या वो 'यकवअिन' कहलाते थे| या ईबराहमि की पेरवी करने वाले 'इब्रेहमियिन' थे या 'दाऊदयिान'| नही नही नही| तो फरि केसे लोग खुद को 'ईसाई' कहलाते हैं? ईसा अलएसलाम ने खुद को कभी ईसाई नही कहा तो केसे लोग खुद को ईसाई कहलवाते है?

ईसा अलएसलाम ने फरमाया के मैने अपने अज़ीम खुदा से जो भी लयिा वो हर एक लफ्ज़ खुदा का था और उसने वो सुना है जो खुदा ने कहा! के वही इसने कयिा! तो क्यूँ लोग खुद को ईसाई कहल वाते हैं? हमें ईसा अलएसलाम की तरह होना पढ़ेगा और क्या था जो ईसा अलएसलाम की तरह

था? वो एक अजीम खुदा की खदिमत करने वेल थे, तो हमें भी चाहये की हम भी बस अज़ीम खुदा के खदिमत गुज़ार बन जाएँ|

आखरी साहत्यि और खुदा की वाणी की हेसयित से, कुरान मैं बहुत साफ़ और थोड़ा बयान कयिा गया है, 'आज मैने तुम्हारे लएि दीन को पूरा कर दयिा और तुम पर अपना इनाम भरपूर कर दयिा और तुम्हारे लएि इस्लाम के दीन होने पर रज़ामंद हो गया' [कुरान सुरा ५, आयात ३] तो कुरान के ज़रएि शब्द 'सलाम' आया कयूंके जब इमारत मुकम्मल होती है तो आप उसको एक घर कहते हैं| जब एक कार बनने की तय्यरी मैं होतो आप उसे गाढ़ी नही कह सकते कयूंके वो अपने बनने के दौर से गुज़र रही हैं| जब वो पूरी बन जाती है, उसको नाम देदयिा जाता है, उसको गाढ़ी को चला कर देखा जाता है, तब ये गाढ़ी पूरी होती है| जब इस्लाम मुकम्मल हुआ था जेसे वाणी पूरी हुई, जेसे एक कताब पूरी हुई, जेसे मुहम्मद स की ज़िंदगी जो नमूना थी पूरी हुई फरि ये इस्लाम बना| ये एक पूरी ज़िंदगी का रास्ता हुआ|

तो ये शब्द है जो के नया था लेकनि ये अमल मैं नही था| ना तो रसूल, खुदा का हुकम नही था, ना एक नया खुदा, ना ही नयी वाणी, लेकनि सरि्फ़ एक नाम, इस्लाम और जेसे मैने पहले कहा था तमाम पेगंबर कोन थे? वो सब मुसलमान थे| एक और बात मोहम्मद स के बारे मैं अपने ज़हनों मैं रखें जो के इनको नुमाया करती है के पछिले तमाम रासूलों की तरह वो सरि्फ़ अरब के लएि नही आए थे या सरि्फ़ अपने लोगों के लएि नही| बहराल इस्लाम अरब का एक मज़हब नही है बलके अबदुल्लाह के बेटे पेगमबरे इस्लाम मोहम्मद स मक्का मैं पैदा हुए जो के अरब नाम के ज़ज़ीरा है और वो पैदाइशी अरबी थे| वो इस्लाम सरि्फ़ अरबीयूं के लएि नही लाए थे लेकनि सारे इंसानों के लएि लाए थे|

हालांकें कुरान अरबी ज़ुबान मैं उतारा गया है, जो इस हक़ को या दावे को खारजि करता है की मोहम्मद स का पैगाम अरबयिों तक महदूद था या सरि्फ़ अरबयिों के लएि था| कुरान मजीद मैं अल्लाह ताआला फरमाते हैं के

"और हमने आपको तमाम जहाँ वालों के लएि रहमत बना कर भेजा है" [कुरान सुरा: २१ आयात:१०७]

लहिाज़ा मोहम्मद स आखरी रासूल हैं और सारे रासूलों और पेगंबरों के ताज हैं, बहुत से लोगों को ये मालूम नहीं है|

और जब से मैं अपनी इस प्रेजेंटेशन की मदद के लएि कुरान पाक के हवाले दे रहा हूँ, अब मैं आपको खुद कुरान के पसमंज़र के बारे मैं बताऊंगा| पहले बात तो ये कुरान दावा करता है के ये मजमुआ है अल्लाह की तरफ़ से भेजी गयी वाणी का| इस का मतलब है के कुरान अज़ीम खुदा की तरफ से मोहम्मद स पर वाणी के माध्यम से उतारा गया|

अल्लाह ताआला फरमाते हैं के

"और ना वो अपनी इच्छा से अपनी बात कहते हैं| वो तो सरि्फ़ वाणी है जो उतारी जाती है" [कुरान सुरा ५३, आयात ३-४]

मोहम्मद स खुद भी ना कुछ कहते हैं, उनके खयालात, उनकी इच्छा या उनके जज़्बात और एहसास भी उनके अपने नही हैं| लेकनि वो एक वाणी है जो के उनपर ज़ाहरि होती है! यही अल्लाह ताआला कुरान पाक मैं फ़रमाते हैं| लहिाज़ा मैं अगर आपको कुरान की ताजादीक करने के लएि कायल करूं, जो के मैं ज़रूर करूँगा| पहली बात ये है के नामुमकनि है के मोहम्मद स खुद से इस तरह की कोई कताब बना सकें| दूसरा ये के मैं साबति करूँगा के इसी तरह की कसिी इंसानो की जमात के लएि भी ये मुमकनि नही था के वो इसको बना सकते| चलएि हम ज़रा इस बारे मैं सोचते हैं|

कुरान पाक मैं बयान है के,

"और हमने इंसानों को पैदा कयिा कतरे से जो के रहम की दीवारों से जाम जाता है" [कुरान सुरा २३, आयात १४]

"जसिने इंसान को खून के लोतड़े से पैदा कयिा" [सुरा ९६, आयात २]

केसे मोहम्मद स ने जाना के लोथड़ा एक कतरे से बनता है और माँ के रहम की दीवारों से चपिक जाता है? कया उनके पास टेलसि्कोप थी? कया उनके पास साइन्स स्कोप थी? कया उनके पास कोई आएसी चीज़ थी जो एक्स रे की तरह काम करती थी? कया उन्होने इस बारे मैं कहीं से ज्ञान हासलि कयिा था, जो के अभी ४७ साल पहले खोजा गया है?

इसी तरह वो केसे जानते थे के समुंद्रओ के बीच मैं

रुकावट है जो नमकीन और ताज़ा पानी को अलग करती है|

"और वही है जिसने दो समुंदर आपस मैं मिला रखें हैं ये है मीठा और मजेदार और ये है खारा कड़वा, और इन दोनो के दरमियाँ एक परदा और मज़बूत रुकावट करदी" [कुरान सुरा २५, आयात ५३]

वो ये केसे जानते थे?

"वही अल्लाह है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को पैदा किया है. इनमे से हर एक अपने दायरे मैं तैर रहें हैं" [कुरान सुरा २१, आयात ३३]

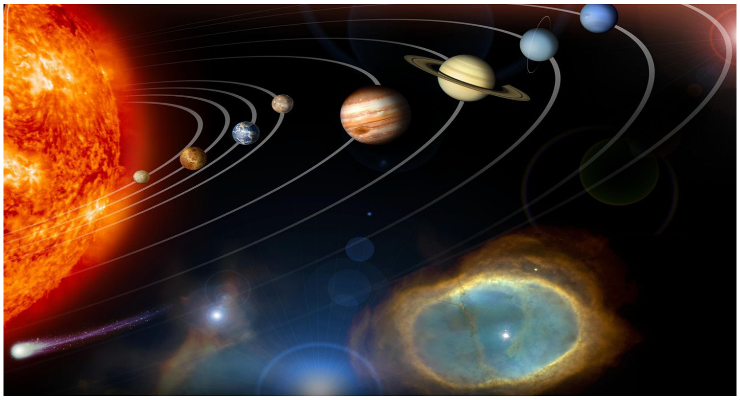

वो केसे जानते थे के सूरज चाँद और तारे सब अपने अपने दायरे मैं तैरते हैं जेसे उन्हे ये करने के लिए किसीने हुकम दिया हो? वो केसे ये केसे जानते थे? और बहुत बहुत बहुत कुछ- केसे वो ये सब जानते थे? ये सब चीज़े २५ या ३० साल पहले खोजी गयीं हैं| टेक्नालजी और साइन्स, इनमे ज़यदातर अब खोजी गयी हैं| मोहम्मद स जो के १५०० साल पहले एक अनपढ़ चरवाहे थे जो के रेगिस्तान में बढ़े हुए| बिना पढ़े लिखे केसे वो ये सब जान सकते थे? केसे उन्होंने इस तरह कुरान को बनाया? और केसे कोई और उनके साथ रहने वालों मैं से, उनसे पहले रहने वालों मैं से और उनके बाद आने वालों मे से किसीने नही पाया, जो अब खोजा जा रहा है? ये नामुमकिन है! केसे एक शाकस जो के अरब नाम के जज़ीरे से बाहर ना गया हो, ना कभी पानी के जहाज़ पर सफ़र किया हो, जो के १५०० साल पहले था इस ने बताई इतनी साफ़ और हेरत अंगेज़ बातें जो के अब २०वीं सदी के आखीरवें हिस्से मैं खोजी जा रहीं हैं?

सिर्फ़ अगर ये सब काफ़ी नही है तो मैं आपको बताता हूँ के कुरान पाक की १४० सूरतें (बाब) हैं, ६००० से ज़ादा आयात हैं और मोहम्मद स के दौर मैं भी ऐसे लोग थे जिन्होने कुरान पाक को ज़ुबानी याद किया हुआ था| ये केसे हो सकता है? क्या वो किसी किस्म के ज़हीन थे? क्या किसीने गॉस्पेल को ज़ुबानी याद किया है? क्या आपमें से किसीने? क्या किसीने ने तोराह या ज़ुबूर को याद किया, पुराने अहेदनामे या नये अहेदनमे को ज़ुबानी याद किया? किसीने नही किया यहाँ तक की पोप ने भी याद नही किया|

लेकिन यहाँ आज भी करोरों मुसलमान हैं जो पूरी किताब को ज़ुबानी याद करते हैं यही हर मुसलमान की खुवहिश होती है, कुछ की नही बल्के सब की! कितने ईसाई आएसए हैं जो आपको आपकी ज़िंदगी मैं मिले होंगे जिन्होने इंजील ज़ुबानी याद की हो? कोई नही| आप कभी ऐसे ईसाई से मिले हैं जिसने पूरी इंजील याद की हो, कयूंके आप कभी ऐसे ईसाई से नही मिले जो पूरी इंजील को जानता हो| ये कयू है? कयूंके ईसाई मैं सात सो ज़ादा फ़िरके हैं और तकरीबन ३९ अलग अलग किताबें हैं इंजील की फिर और अलग अलग किताबो पर किताबें| अलग अलग तादाद मैं बाब और अलग अलग उनकी आयतों की तादाद और वो उनको मानते भी नही| जब वो उनको मानते हे नही हैं तो केसे वो उसको ज़ुबानी याद कर सकते हैं|

ये कुछ हकीकत है कुरान के बारे मैं| कुरान पूरी दुनिया मैं बिना किसी मामूली से परिवर्तन के १५०० साल से महफ़ूज़ है और मैं अस्वीकार करने के अंदाज़ मैं नही कह रहा| मैं एक शकस हू जो ईसाई था| एक शकस जिसने अपनी खोज से ये सब चीज़ें पाई| एक शकस जो अब आपके साथ ये मालूमत पहुंचा रहा है| कुछ पत्थरों को पलटकर आपको उसके अंदर दिखाने के लिए और बाकी आप पर है!

सिर्फ़ आप इतना सोचिए के अगर ये सब सच हो तो आप मानने लगेंगे के ये किताब सच मैं गौर ओ फ़िक्र वाली है? और कम से कम कह सकते हैं के ये अनोखा है? क्या आप इतना सच्चा बनना चाहते हैं की ये कह सकें? यकीनन आप चाहेंगे, अगर आप सच्चे थे और आप सच्चे हों| आप अपने आप मैं देखिए आपको उन बातों को मानना पढ़ेगा बहुत से दूसरे गैर मुस्लिम भी इस नतीजे पर पहुंचे| जिन मे बेंजामिन फ़्रेंकलिन, थॉमस जेफ़रसन, नापोलियन बोनपार्ट और विन्सटन चर्चिल जेसे सिर्फ़ चन्द नाम हैं और बहुत से हैं अगर मैं बताऊं तो बताता चला जाऊँ ये सब इसी नतीजे पर पहुंचे| ये और बात हे की उन्होने खुले आम इसलाम कुबूल किया या नही| वो इस नतीजे पर पौंचे की इस दुनिया मैं कोई दूसरा अदब नही जिसमे इतना गौर ओ फ़िक्र हो जितना की कुरान मैं है ये एक ज़रिया है हकिमत का, सब्र का और सीधे रास्ते का|

अब हमने कुरान की सदाकत की बात करली, अब हम दूसरे बात पर आते हैं कुरान की बुनियादी मज़ामीन| अज़ीम खुदा की एकीशवरवाद, जो के इसके नाम मैं, इसके सिफ़ितों मैं, अज़ीम खुदा और उसकी मखलोक के दरमियाँ ताल्लुक मैं, केसे इंसानों को इस ताल्लुक को कायम रखने मैं शामिल हैं| रासूलों और पेगंबरों का सिलसिला, इनकी ज़िंदगियाँ, इनके पैगामात और इनका तमाम काम जो इन्होने किया| इनका इसरार के ये पेरवी करें मोहम्मद स की जो के रासूलों और पेगंबरों मैं आखरी और कयनात के लिए एक मिसाल हैं| लोगों के याद दिलाएँ के उनकी ज़िंदगी बहुत छोटी है और उनको बुलाया जायगा वहाँ हमेशा की ज़िंदगी के लिए| इस बात का मतलब इसके बाद की ज़िंदगी| इसके बाद आप ये जगह छोड़ जाओगे और कहीं और चले जाओगे| इसका मतलब आज रात नही मगर मरने के बाद आप इस ज़मीन को छोड़ कर कहीं और चले जाओगे बेशक आप मानो या ना

मानो आप इसबारे मैं आप नही जानते| आपको वहाँ जाना है, आप जिम्मेदार हैं क्यूंके आपको बता दिया गया है यहां तक के आप इसे नकार दो| क्यूंकी ज़िंदगी का मतलब यहाँ ये नही है के आप बैठे रहो, कुछ ना करो और आप पर कोई असर ना होगा| हर वजह का असर होता है और आप इस ज़िंदगी मैं एक वजह से हैं, एक मकसद के लिए तो असर तो लाज़मी पढ़ेगा कुछ करने का किसी किस्म का असर तो लाज़मी होगा| आप स्कूल नही जाएँगे तो आप ठहरे रहेंगे! आप काम पर नही जायनगे तो मुआवजा भी नही मिलेगा! आप घर नही बनायंगे तो उसके अंदर जा भी नही सकते! लिबास नही बनवायंगे तो पहनेंगे भी नही! आप बढ़े ना हो बच्चो के जेसे तो जवान भी नहीं होंगे! आप कोई भी काम बगैर किसी मुमकिन इनाम के नही करते! आप नही जी सकते बगैर मरने की सोच के! आप मर नही सकते बगैर किसी कब्र की संभावना पर और आप ये खयाल नही कर सकते के क़ब्र ख़ात्मा है| क्यूंकी इसका मतलब होगा की खुदा ने आपको बेवकूफ़ाना मकसद के लिए पैदा किया था| और आप स्कूल नही जाते, काम नही करते या कुछ नही करते या बीवी पसंद नही करते या बच्चो के नाम बेवकूफ़ाना मकसद के लिए चुनते हो| केसे आप खुदा को अपने से कम समझ सकते हो?

मुतवज्जे करने, तसव्वुर से कायल करने, और गौर ओ फ़िक्र के काबिल करने के लिए क़ुरान भत गहराई और खूबसूरत अंदाज़ मैं बताता है महासागरों और दरियाओं की, पेड़ और पोधो की, परिंदो और कीढ़े और मकोड़ो की, जंगली और पालतू ज़ानवरों की, पहाड़ो, वादियों, जन्नत के फेलने की, फरिश्तों और कायनात की, मछलीओ और पानी के जीव जन्तूओं की, इंसानी की शारीरिक रचना और जीव विज्ञान की, इंसानी सभ्यता और इतिहास की, मानव भ्रूण के विकास की, स्वर्ग और नरक के विवरण की, मानव भ्रूण के विकास की, सब नबी और दूत के काम की, ज़मीन पर ज़िंदगी के मकसद की| तो केसे एक चरवाहाः लड़का रेगिस्तान मैं पैदा होने वाला जो बगैर पढ़े लिखे पैदा हुआ और पढ़ नही सकता, केसे वो इन सब चीजों की पुष्टि कर सकता है जिनका कभी उस से संपर्क ही नही हुआ था?

बहराल सबसे ज़्यादा मुनफ़रीद चीज़ जो कुरान की है जो तमाम पिछली मुकद्दस किताबों की पुष्टि करता है| डीन इस्लाम का अच्छी तरह जायज़ा लेकर आपको फैसला करना चाहिये के आप मुसलमान हो, आप अपने आप से ये ना सोचें के आप मज़हब बदल रहें हैं! आप अपना मज़हब नही बदल रहे हैं| आप देखिए की आपका वज़न कम हो जाए तो आप अपना $५०० डालर का लिबास नही फेंकना चाहेंगे, यकीनन नहीं! आप उसे दर्ज़ी के पास लेकर जाएँगे और कहेंगे के सुनो, मेहेरबानी करके! इसे मेरे लिए थोडा सा छोटा करदो आप इसमे कुछ सही कराएँगे क्यूंके ये लिबास आपको पसंद है इसी तरह अपने ईमान के, इज्ज़त के, पाकिज़गी के, ईसा अलएसलाम की मोहब्बत के, आप के खुदा से ताल्लुक के साथ, आप की इबादत, आपकी सच्चाई और आपकी अज़ीम खुदा के वक्फ़ होने के साथ इसे तब्दील ना करें की इसे छोड़ दें! आप इस पर कायम रहें लेकिन खुद को सही करें जहाँ आप ज़ानते हैं की सच आपको मालूम हो गया है! यही सब कुछ है|

इस्लाम सादा है: सिर्फ़ गवाही देता है की कोई इबादत के लायक़ नही सिवाए अजीम खुदा के| अगर मैं आप से पूछू के आपके पिता आपके पिता हैं, आप मैं से कितने कहेंगे के हाँ मेरे पिता मेरे पिता हैं, मेरा पुत्र मेरा पुत्र है, मेरी पत्नी मेरी पत्नी है, मैं हूँ जामिन हूँ, तो फिर केसे है ये आप इस बात की गवाही देते हुए घबराते हैं की अज़ीम खुदा तुम्हारा मालिक और खालिक है? क्यू आप गुरूर करते हैं आएसा करने मैं? क्या आप अज्मत वालें हैं? क्या आपके पास कोई आएसी चीज़ है जो खुदा के पास नही है? या क्या आप उलझे हुए हैं? ये सवालात हैं जो आप खुद से करें|

अगर आपके पास मौका होता की आप चीजें सही रखें अपने शहर से और फिर खुदा के साथ चीजें सही रखें, क्या आपको आएसा करना चाहिये? अगर आप को मोका मिलता तो आप पूछते खुदा से के मेरा जो सबसे बेहतरीन काम है उसे कुबूल करें क्या आपको आएसा करना चाहिए? अगर आपको ऐसा मोका मिले आपके मरने से पहले और आप समझें की आज रात को आप मार सकते हैं तो क्या आप को कोई संकोच नही होना चाहिए इस बात की गवाही देने मे की अल्लाह एक है? अगर आप समझें की आप आज रात को इंतकाल कर जाएंगे और आपके सामने जन्नत हो और पीछे दोज़ख की आग, क्या आप अब भी हिचकिचायेंगे इस बात की गवाही देने से की मोहम्मद स खुदा के आखरी पेगंबर और खुदा के तमाम रासूलों के नुमायन्दे हैं? आप को हिचकिचाना नहीं चाहये इस बात की गवाही देने से के आप भी उन बहुत से लोगों मैं शामिल हो जाएँगे जो अल्लाह की किताब मैं अपना नाम दर्ज कराना चाहते हैं|

लेकिन आप सोच रहे हैं के आप थोडी ज़िंदगी और जीना चाहते हैं और यकीनन अभी आप तय्यार नहीं हैं की रोज़ इबादत की जाए! इस लिए आप सोचते हैं के थोड़ी ज़िंदगी को आएसए ही गुजारा जाए| लेकिन कब तक थोडी थोडी ज़िंदगी गुजारेंगे? कितना अरसा हो गया की आपका सर बालों से भरा हुआ था? कितना अरसा हो गया जब आपके बाल काले थे? आपके घुटनो, कोहनियों और दूसरे हिस्सों मैं दर्द रहने लगा! कितना अरसा हो गया जब के आप बच्चे थे, बगैर किसी फ़िक्र के भागते थे, खेलते थे? कितना अरसा हो गया इनको? ये कल ही तो था! हाँ और कल आपको मार जाना है तो कितना अरसा आप इंतज़ार करना चाहते हैं?

इस्लाम गवाही है के अजीम खुदा ही खुदा है सिर्फ़ एक खुदा बगैर किसी की शिरकत के| इस्लाम गवाही है की फरिश्ते हैं जो की जिम्मेदारी के साथ पेगंबारो के पास वाणी लेकर भेजे जाते हैं, वो लेकर आते हैं पैगाम रासूलों के लिए, वो पहाड़ो, हवाओं, महासागरों को काबू मैं करते हैं और जान निकलते हैं जिनके लिए खुदा हुकम देता है| इस्लाम गवाही है के तमाम अजीम खुदा के रसूल और पेगंबर सच्चे थे| और वो सब अज़ीम खुदा की तरफ से इस हकीकत की गवाही कराने के लिए भेजे गये थे की एक फैसले का दिन तमाम मखलूकात के लिए आयगा| इस्लाम गवाही है की तमाम अच्छाइयों और बुराइयों का अज़ीम खुदा हिसाब लेगा| आखिर मैं इस्लाम गवाही है के इस पर ईमान होना के हमें मरने के बाद ज़िंदा होना है|

हर मुसलमान पर बुनियादी जिम्मेदारी जो लागू होती हो बहुत सादा हैं| हकीकत मैं सिर्फ़ पाँच चीज़ें हैं| इस्लाम एक बढ़े घर की तरह है और हर घर की बुनियाद और खंबे होते हैं जो घर को कायम रखने मैं मदद देते हैं| खंबे और बुनियाद और आपको घर उसूलों के साथ बनाना पढेगा| खंबे हैं वो उसूल| और आप जब घर बनाते हैं तो इन लाज़मी उसूलों की पाबंदी करते हैं| सब से अहम उसूल इस्लाम का अकीदा तोहीद को मज़बूती से थामे रखना के अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करो| अल्लाह के साथ किसी की इबादत ना करो| खुदा से ऐसा ना कहो जिसके कहने का आपको हक़ नहीं हैं, जब आप गवाही देते हैं तो सज़ावार भी आप खुद हो| जो चाहें वो सज़ा पाएं| आप चाहे तो अपने लिए अमन और जन्नत की सज़ा लें या फिर चाहें तो उलझन, दाबाओ, जहन्नम की आग और जिस्मानी सज़ा पाएं| आपकी सज़ा

आपकी है|

तो अपने आप से पूछिए 'के आप गवाही देंगे के खुदा सिर्फ़ एक है?' जब आप खुद से ये सवाल पूछेंगे तो आपको जवाब मिलना चाहये 'हाँ, मैं गवाही देता हूँ'|फिर आप खुद से पूछें अगला सवाल के मैं गवाही देता हूँ के मोहम्मद स अज़ीम खुदा के पेगंबर हैं? "हाँ, मैं गवाही देता हूँ"| अगर आप ये गवाही देते हैं तो आप मुसलमान हैं और आप को खुद को तब्दील नही करना पढ़ेगा| सिर्फ़ अपने आप की इस्लाह करनी होगी अपनी सोच मे और अपने अमल मे|

आखिर मे, मैं आपसे सवाल करता हूँ के: क्या आप समझे जो मैने आपसे कहा? अगर आप इसको मानते हैं जो मैने कहा और इस्लाम मे दाखिल होने और मुसलमान होने के लिए तय्यार हैं| तो मुसलमान होने के लिए आपको लाज़मी है के कलमा शहादत का एलान करें; जो के एलान है के मैं ईमान लाया खुदा के एक होने पर और कुबूल किया के मोहम्मद स खुदा के रसूल हैं|

http://www.islamicbulletin.org/purpose/shahada/sh_hindi.mp4

لا إله إلا الله محمد رسول الله

ला इलाहा इल्लल लाहू मोहम्मदुर रसूल अल्लाह

नही कोई माबूद सिवाए अल्लाह के और मोहम्मद स अल्लाह के रसूल हैं|

सही उच्चारण के लिए वीडियो देखें!!

मैं गवाही देता हूँ के खुदा सिर्फ़ एक है|

मैं गवाही देता हूँ के मोहम्मद स अल्लाह के पेगंबर हैं|

वीडियो देखें:

http://www.islamicbulletin.org/purpose/shahada/sh_hindi.mp4

अल्लाह हम सब पर रहम करे और हमे सीधा रास्ता दिखाए| मैं तमाम गैर मुसलमानो को - जो इस इशात को पढ़ रहे हो| कहता हूँ के खुद से सच्चे हो जो आपने पढ़ा है इसके बारे मे सोचें| इस जानकारी को अपने पास रखें और खुद मे जज़्ब कर लें| किसी मुसलमान के साथ बैठें और इस्लाम की खूबसूरती के बारे में उस से और तफ़सील मालूम करें| अगला कदम बढ़ाएं!

जब आप इस्लाम कुबूल करने के लिए और मुसलमान होने के लिए तय्यार हो जाएँ, तो औपचारिक रूप से मुसलमान होने से पहले खुद को धो लें| इस्लाम कुबूल करें| इस्लाम के बारे मे जानें इस पर अमल करें और खुदा की दी गयीं नेमतों (इनाम) का आनंद लें कयूंकी ईमान सब कुछ नही है के जिस से आप बक्शे जाएँ| अगर आप इस पर अमल नही करेंगे तो आप इसकी खुशबू खो देंगे| ए अल्लाह हमारी रहनूमाई फरमा| ए अल्लाह हमारी मदद फरमा और मैं सरहाता हूँ आपको इस अेजाज़ का जो मुझे बकशा गया और मुझे बोलने का मौका फराहमि किया गया इस इशात के ज़रिए|

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

अस्सलामो अलैकुम वा रहमतुल्लाह वा बरकाताहु

[तरजुमा: आप सब पर अल्लाह की सलामती हो, रेहमते हों और बरकतें हो|"]

अगर आप मुसलमान होना चाहतें हैं या आपको इस्लाम के बारे मैं मज़ीद जानकारी चाहये तो, बराए मेहेरबानी हमें ई-मेल करें: info@islamicbulletin.org या विज़िट करें www.islamicbulletin.org

www.islamicbulletin.org/purpose/hindi/Flipping/purpose_hindi/index.html

http://www.islamicbulletin.org/purpose/shahada/sh_hindi.mp4

http://www.islamicbulletin.org/hindi/hindi.htm

http://www.islamicbulletin.org/newsletters/issue_24_hindi/beliefs.aspx

http://www.islamicbulletin.org/services/new_muslims/carla_hindi.html

http://www.islamicbulletin.org/services/foreign.htm